कलीसिया अध्याय 38

1	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **याकूब 4-5 और 1 पतरस 1-2**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (*या* अपने नोट्स से *पढ़ें*) कि आपने दिये गये अनुच्छेद (याकूब 4 से 5 और 1 पतरस 1-2) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) *[मसीही अभिभावक]* **(2) नीतिवचन 22:6**

दो-दो करके *अवलोकन* करें।
(2) सारी बातों में उन्नति करें। नीतिवचन 22:6। लड़के को उसी मार्ग की शिक्षा दे जिसमें उसको चलना चाहिये, और वह बुढ़ापे में भी उसे से न हटेगा।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* **यूहन्ना 17**

परिचय दें। एक साथ मिलकर, बाइबल अध्ययन करने के पांच कदमों के तरीके का इस्तेमाल करते हुए **यूहन्ना 17:1-26** का अध्ययन करें। यूहन्ना 14 से लेकर 17 अध्याय के बीच में यीशु मसीह द्वारा फसह के पर्व पर की गयी प्रार्थना और शिक्षाओं को (यूहन्ना 13:1) का वर्णन किया गया है। यूहन्ना 17 में, यीशु मसीह अध्याय का अन्त प्रार्थना के साथ करता है। उसकी प्रार्थना को तीन भागों में बांटा जा सकता है। वह निम्न बातों के लिए प्रार्थना करता है:

- अपने लिए(यूहन्ना 17:1-5)
- उसके ग्यारह चेलों के लिए(यूहन्ना 17:6-19)
- संसार में मसीही कलीसियाओं के लिए(यूहन्ना 17:20-26)।

वह इस बात पर ज़ोर देता है कि प्रार्थना का उद्देश्य परमेश्वर की महिमा करना है।
मत्ती 6:9-13 में उसने मसीहियों को सिखाया की उन्हें किस तरह प्रार्थना करनी है। लेकिन यूहन्ना 17 अध्याय में उसकी याजकीय प्रार्थना बिल्कुल अनोखी है, क्योंकि उसमें वह *अपने* पिता से(*हमारे* पिता से नहीं) बातें कर रहा है। वह "मनुष्य के पुत्र" के रूप में अपने लोगों के लिए परमेश्वर पिता से प्रार्थना करता है जो वास्तव में पिता के लोग भी है। वह इस प्रार्थना में किसी प्रकार के पाप या गलती के लिए कोई क्षमा याचना नहीं करता वरन वह इस बात पर ज़ोर देता है कि उसने परमेश्वर की इच्छा को पूरा किया

है(पद 4)। वह परमेश्वर के साथ आवश्यक रिश्ते के बारे में बात करता है। वह किसी अधीन जन के समान याचना नहीं करता, वरन परमेश्वर की समानता में होकर मांगता है। वह इस तरह से बात करता है मानों उसके पास सारी प्रार्थनाओं का जवाह हो। इसका विषय परमेश्वर द्वारा अपने दासों को दिया गया महान आदेश है जो उसने अपने चेलों को इस धरती पर पूरा करने के लिए दिया है, जो विभाजित लोग नहीं वरन एक आत्मिक एकता है। यीशु ने अपनी आंखें स्वर्ग की ओर खोलकर प्रार्थना की।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 17:1-26 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

खोज 1. यीशु मसीही की प्रार्थना की विषय वस्तु।

यीशु मसीह ने अपने सम्बन्ध में प्रार्थना करते हुए, परमेश्वर पिता की महिमा की और परमेश्वर पिता से अपनी महिमा करने के लिए कहा। अपने ग्याहर चेलों के लिए प्रार्थना करते समय, उसने इस बात को स्वीकार किया कि वे परमेश्वर के हैं और परमेश्वर ने ही उन्हें उसके हाथों में सौंपा है। उसने उन पर अदृश्य परमेश्वर और उसके वचनों को प्रगट किया है। उन्होंने वचनों को स्वीकार किया, विश्वास किया और अपने जीवन में उनका पालन किया है। और अब यीशु मसीह उन्हें महान आदेश देकर सच्चाई का सुसमाचार सुनाने के लिए भेजेगा। यीशु मसीह ने निम्न बातों के लिए प्रार्थना की:

- उनकी एकता के लिए
- आनन्द की भरपूरी प्राप्त करने के लिए।
- शैतान के विरूद्ध सुरक्षा देने के लिए।
- मसीह के कार्यों और उसके वचनों द्वारा उनके शुद्धिकरण के लिए प्रार्थना की।

अपनी प्रार्थना में दुनिया के अलग अलग संस्कृति से आये हुए विश्वासियों के लिए प्रार्थना करते हुए उसने उनके लिए एकता को मांगा, ताकि संसार (विभाजित, अनभिज्ञ, पापमय और प्रतिकूल) विश्वास कर सके कि परमेश्वर ने ही यीशु मसीह को भेजा था। वह यह भी प्रार्थना करता है कि वे एक दिन उसके साथ हों, ताकि वे उसकी महिमा को देख सकें। और वह प्रार्थना करता है कि परमेश्वर का प्रेम व वह खुद उनमें रहे। कितनी अद्‌भुत प्रार्थना है।

खोज 2. परमेश्वर पिता, यीशु मसीह और मसीहियों के बीच में एकता।

यूहन्ना 17:4,6 में हम *परमेश्वर पिता और मसीहियों के लिए यीशु मसीह के प्रेम* के बारे में पढ़ते हैं। यीशु मसीह ने धरती पर परमेश्वर पिता द्वारा किये गये कामों को पूरा करके परमेश्वर पिता को प्रेम किया। इससे परमेश्वर पिता को धरती पर महिमा मिली। यीशु मसीह ने परमेश्वर के नाम को प्रगट करके मसीहियों को प्रेम किया जैसा कि उसने मसीह में होकर और बाइबल में अपने आप को प्रगट किया है। यीशु मसीह ने उनके उद्धार के सम्बन्ध में परमेश्वर के गुणों को प्रगट किया है।

यूहन्ना 17: 26 में हम *परमेश्वर पिता के यीशु मसीह और मसीहियों के प्रति प्रेम* के बारे में पढ़ते है। यीशु मसीह प्रार्थना करते हैं कि जो प्रेम पिता परमेश्वर उससे करते वही प्रेम वह इस संसार में रहने वाले मसीहियों पर भी प्रगट करें।

यूहन्ना 17:6,8 में हम *यीशु मसीह और परमेश्वर पिता के प्रति मसीहियों के प्रेम* के बारे में पढ़ते हैं। मसीही लोग यह स्वीकार करके कि यीशु मसीह परमेश्वर पिता की ओर से आये हैं यीशु मसीह को प्रेम करते हैं। वे इसे निश्चित तौर पर जानते हैं और इस सच्चाई का अंगीकार करते हैं। मसीही लोग परमेश्वर पिता के वचनों को मानकर परमेश्वर पिता को प्रेम करते हैं।

इसलिए, एक मात्र सच्चे परमेश्वर और धरती पर उसके लोगों के बीच एकता पुराने नियम में पायी जाने वाली इस्राएली गणराज्य की राष्ट्रीय या राजनैतिक एकता पर निर्भर नहीं है। स्वर्ग में विराजमान परमेश्वर और धरती पर रहने वाले लोगों के बीच एकता किसी कलीसिया नाम (जैसे रोमन कैथोलिक) या बहु-कलीसियाई संगठन (चर्च ऑफ साउथ इण्डिया) पर आधारित नहीं है। परमेश्वर और धरती पर उसके बच्चों के बीच एकता केवल यीशु मसीह और उसके प्रेम पर ही आधाारित है। परमेश्वर अपने लोगों को शुरू से लेकर अन्त तक यीशु मसीह के द्वारा ही उद्धार प्रदान करता है और परमेश्वर और उसके लोगों के बीच सम्बन्ध का परिणाम प्रेम है।

मसीहीयों का परमेश्वर के लिए प्रेम केवल भावनात्मक प्रेम नहीं है, वरन इसे निम्नलिखित पदों के द्वारा परिभाषित किया जा सकता है।

- मरकुस 12:30-31 सिखाते हैं कि परमेश्वर और उसके लोगों के बीच में एकता व सम्बन्ध किसी भी जन के व्यक्तित्व व उसके व्यवहार में बाइबल के परमेश्वर के प्रति *सम्पूर्ण समर्पण द्वारा* प्रगट हो जाता है।

- दूसरा, यूहन्ना 14:21-23 हमें सिखाता है कि परमेश्वर और उसके लोगों के बीच में *एकता* और सम्बन्ध बाइबल में पाये जाने वाले *वचनों* को मानने से प्रगट हो जाता है।

- तीसरा, यूहन्ना 13:34-35 हमें सिखाता है कि परमेश्वर और उसके लोगों के बीच में एकता और सम्बन्ध मसीहीयों के आपस में ठीक उस तरीके से प्रेम करने से प्रगट हो जाता है जैसे मसीह *उनसे प्रेम* करता है।

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये यूहन्ना 17:1-26 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करे।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

17:1

प्रश्न 1. **जब यीशु ने कहा कि "वह समय आ गया है", तो उसका क्या अभिप्राय था?**

इस वाक्य से, यीशु यह बात साबित करते हैं कि, वह इस सच्चाई के प्रति सचेत हैं कि इतिहास में जो कोई घटना घटती है वह परमेश्वर की योजना में एक नियुक्त समय होता है। वह इस बात को जानता है कि उद्धार से सम्बन्धित सामर्थी कहानी में हर एक घटना के लिए परमेश्वर की योजना में एक नियुक्त समय होता है।

यूहन्ना रचित सुसमाचार में, यीशु ने कई बार कहा,"मेरा समय अभी तक नहीं आया है"(यूहनना 2:4; 7:6,8,30; 8:20)। लेकिन जब उसने अपनी आने वाली मृत्युके बारे में बात की तो उसने कहा, "अब वह समय आ गया है(निश्चित काल)कि मनुष्य के पुत्र की महिमा हो"(यूहन्ना 12:23)। और वीरवार की शाम की शुरूआत में, उसके चेलों के साथ अन्तिम फसह भोज खाते समय, उसे पता था कि उसका इस संसार को छोड़कर अपने पिता के पास जाने का समय आ गया है" (यूहन्ना 13:1)। वह पूरा प्रसंग दर्शाता है कि यीशु मसीह केवल क्रूस पर अपनी मृत्यु के बारे में ही नहीं वरन इस धरती पर रहते हुए अपनी सेवाकाई के विषय में भी सोच रहे थे। यीशु जानते थे कि उसकी मृत्यु, पुनरूत्थान, उठाये जाने और सिंहासन पर विराजमान होने का समय हो चुका है। यीशु के मन में, धरती पर उसके कष्ट और उसके परिणाम स्वरूप उसकी महिमा के विचार दोनो चल रहे थे(रोमियों 8:17)!

यूहन्ना 12:32 में उसने कहा कि उसे ऊंचे पर उठाया जाएगा। वह अपने क्रूस पर उठाये जाने, अपने स्वर्ग में उठाये जाने और अपने सिंहासन पर उठाये जाने की बात कर रहा था। उसने कहा, "लेकिन जब मैं ऊंचे पर उठाया जाऊंगा तो सारे लोगों को अपने पास खींच लूंगा।" यीशु मसीह अदृश्य परमेश्वर का प्रत्यक्ष प्रकाशन है(कुलुस्सियों 1:15)और यीशु मसीह "प्रभु हमारे साथ है।" प्रथम शताब्दी के प्रारम्भ से ही परमेश्वर यीशु मसीह के माध्यम से सब लेगों को अपने करीब खींच रहा है। यूहन्ना 14:3-4 में, यीशु ने कहा कि वह स्वर्ग में एक जगह तैयार करने जा रहा हैं ताकि मसीही लोग भी आकर सदा काल के लिए उसके साथ रह सकें। यूहन्ना 16 में यीशु मसीह ने कहा कि वह पवित्र आत्मा की सहायता से स्वर्ग से कार्य करेगा। इब्रानियों 7:25 में लिखा है कि वह अपनी नियमित प्रार्थनाओं के द्वारा स्वर्ग से भी कार्य करेगा। यीशु मसीह के कामों से लोगा के जीवन में परिवर्तन और आनन्द आएगा। वह समय था और अभी है। अत: वह "समय आ गया था" उसके क्रूसीकरण, पुरनरूत्थान और उसके उठाये जाने और स्वर्गीय पिता के दाहिने हाथ पर बने सिंहासन पर विराजमान होने का समय था।

17:1

प्रश्न 2. **जब यीशु ने कहा कि "अपने पिता की महिमा कर" तो उसका क्या अर्थ था?**

ध्यान दें! परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र की महिमा करता है। यीशु प्रार्थना करते हैं कि, मेरी मृत्यु, पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण और सिंहासन पर विराजमान होने के द्वारा मेरी महिमा करो। यीशु मसीह की महिमा तब होती है जब उसकी महिमा मेघ धनुष के रंगों के समान प्रगट होती है। यीशु मसीह की महिमा तब होती है जब उसके ईश्वरीय गुणों का तेज सारी दुनिया पर प्रगट होता है। केवल क्रूस ही नहीं वरन उसका मुकुट भी यीशु मसीह की महिमा को प्रगट करता है।

(1) यीशु मसीह की महिमा क्रूसीकरण के दौरान प्रगट हुई थी।

उसकी मृत्यु ने परमेश्वर पिता के प्रति उसकी *सिद्ध आज्ञाकारिता*(इब्रानियों 5:8-9), खोये हुए लोगों के लिए उसका अथाह प्रेम और शैतान के कामों पर अधिकार को प्रगट किया था।

(2) यीशु मसीह की महिमा उसके पुनरूत्थान पर प्रगट हुई थी।

मृत्यु में से उसके जी उठने के द्वारा पापों और उसके परिणामों पर उसकी *विजय* प्रगट हुई थी(रोमियों 8:34-39)। यह प्रगट करता है कि हमारे पापों के खातिर यीशु के पवित्र और धार्मिक अनादर व अपमान ने परमेश्वर को सन्तुष्ट किया और परमेश्वर ने हमारे पापों के लिए किये गये प्रायश्चित को पूरी तरह से स्वीकार कर लिया है। मृतकों में से जी उठना मृत्यु, सड़ाहट, निराशा और अर्थहीनता पर उसके अधिकार को दर्शाता है। उसका मृतकों में से जी उठना भविष्य में हमारे मृतकों में से जी उठने का निश्चय है और वह साबित करता है कि मृत्यु उपरान्त एक अर्थपूर्ण जीवन बाकि है। सड़ाहट में से उसका पुनः जी उठना संसार के भविष्य में नवीनीकरण को दर्शाता है, जिससे वर्तमान धरती की सारी निराशाएं खत्म हो जाएगी और आने वाले समय में धरती पर सार्थक जीवन की आशा उत्पन्न हो जाएगी।

उसके पुनरूत्थान की ऐतिहसिक घटना बताती है वह पवित्र आत्मा के द्वारा इस अवस्था में पहुंचा। उसके पुनरूत्थान के द्वारा उसने अपने मानवीय स्वभाव की कमज़ोरियों को उतार दिया और पाप और मृत्यु के हर बन्धन को काट डाला। पुनरूत्थान के बाद से उसका मानवीय स्वभाव पवित्र आत्मा द्वारा इतना बदल गया व नियंत्रित हो गया कि वह बिल्कुल पवित्र आत्मा के समान हो गया! इसी कारण 2कुरिन्थियों 3:17 में लिखा है,"(मसीह)परमेश्वर आत्मा है।" इसी कारण 1कुरिन्थियों 15:46 में, मसीह को, "जीवन दायक आत्मा" कहा गया है। और इसी तरह से रोमियों 1:4 में, उसका पुनरूत्थित स्वभाव को "पवित्रता की आत्मा" द्वारा सम्बोधित किया गया है। उसे वह श्रेष्ठ सर्वशक्तिमान के पद से अधिष्ठापित किया गया और उसे वह शक्ति प्रदान की गयी थी जो उसकी अवतार रूपी अवस्था से हर दृष्टिकोण से (मत्ती 28:18) वर्णन से परे थी। उसके पुनरूत्थान के पश्चात, यीशु मसीह के मानवीय स्वभाव पर पवित्र आत्मा की शक्ति और प्रभुता ने पूरी तरह से अपना कब्ज़ा कर लिया था!

यीशु मसीह ने उदघोषणा की कि वह इस संसार का उद्धारकर्ता और इस जगत का प्रभु है। उसका मृतकों में से उसका जी उठना उसके दावों की सत्यता को प्रमाणित करता है। और यह उसकी शिक्षाओं की सच्चाई का सबसे शक्तिशाली प्रदर्शन है।

(3) यीशु मसीह के स्वर्गारोहण में उसकी महिमा प्रगट हुई थी।

उसका धरती पर से स्वर्ग में उठा लिया जाना परमेश्वर द्वारा उसकी पूर्ण स्वीकृती को प्रगट करता है। यूहन्ना 17: 5 में यीशु मसीह प्रार्थना करते हैं कि, "हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो

जगत की सृष्टि से पहले, मेरे साथ थी। सृष्टि की रचना से पहले ही प्रभु यीशु मसीह में ईश्वरी स्वभाव विद्यमान था और वह पूरी तरह से परमेश्वर पिता के समान था(फिलिप्पियों 2:6-8)। परमेश्वर की उपस्थिति में कोई पाप या दु:ख नहीं था। लेकिन धरती के लोगों को बचाने के लिए उसने स्वेच्छा से अपनी महिमा को त्याग दिया, और मनुष्य का स्वरूप धारण किया, इस धरती पर पापियों के बीच में रहा, संसार के पापों को अपने ऊपर उठा लिया, और क्रूस पर उसने अपनी जान दे दी(1पतरस 2:24)।

यह तस्वीर रोम के ग्रैण्ड विक्ट्री परेड के विजयी रोमी जनरल की है, जिसके पीछे वे लोग होते हैं जिन पर उसने विजय पायी होती या जिन्हें उसने कब्जें में किया होता है।

- यूहन्ना 17:5 में। वह समय आ गया था जिसमें यीशु अपनी पुरानी महिमा में वापस लौटता! उसका धरती पर से स्वर्गारोहण केवल स्वर्ग में उसकी स्वर्ग में वापसी नहीं थी, वरन अनाज्ञाकारी लोगों और मानवीय इतिहास में पायी जाने वाली बुरी आत्माओं पर पूर्ण रूप से विजय का प्रगटीकरण था।
- 2कुरिन्थ्यिों 2:14 कि यीशु मसीह सारे मसीहियों को जय के उत्सव में ले चलता है और उनके द्वारा अपने ज्ञान की सुगन्ध हर जगह फैलाता है।
- इफिसियों 4:8-10 में लिखा है कि यीशु मसीह स्वर्ग से धरती की गहराई तक नीचे उतरा(अर्थात पतित मनुष्य का स्वभाव लेकर उतरा) और फिर से स्वर्ग की ऊंचाई वाले "तारों से भरे" आसमान तक चढ़ गया(2कुरिन्थियों 12:2) जो कि परमेश्वर का निवास स्थान है। "सब प्रकार की प्रधानता और अधिकार, और सामर्थ और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर जो न केवल इस लोक में पर आने वाले लोक में भी लिया जाएगा बैठाया, और सब कुछ उसके पैरों तले कर दिया"(इफिसियों 1:21-22)। अपने स्वर्गारोहण में वह अपने साथ में बन्दियों को बांध ले गया(पद 8)।
- कुलुस्सियों 2:15 में लिखा है कि सब प्रकार की बुरी शक्तियों (मानवीय और आत्मिक)पर विजय प्राप्त करने के बाद में उसने क्रूस पर अपनी जान दे दी, उसने मृतकों में से जी उठकर और स्वर्ग में चढ़कर उनका खुल्लम खुल्लाह तमाशा बनाया(लोगों के अपने साथ आजाद करवा कर)।
- 1पतरस 3:18-19 में लिखा है कि यीशु मसीह पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से ही मुर्दों में से जीवित हुआ, उसका "स्वर्गारोहण" एक सभी अनाज्ञाकारी लोगों (मत्ती 24:37-39)और कैदी बुरी आत्माओं पर(अर्थात नरक) विजय की "उदघोषणा" थी (2पतरस 2:4)। 1पतरस 3:22 कहता है कि उसके "स्वर्गारोहण" ने सारे स्वर्गदूतों,अधिकारों और जगत की सारी शक्तियों को उसके अधीन कर दिया।

(4) यीशु मसीह की महिमा उसके सिहांसन पर विराजमान होने पर प्रगट हुई।

स्वर्ग में परमेश्वर पिता के दाहिने हाथ पर विराजमान होना न केवल धरती पर उसके द्वारा किस जान वाले उद्धार के सिद्ध प्रतिफल को, वरन सारे जगत में हर एक मनुष्य और हर चीज़ पर उसकी सर्वश्रेष्ठ शक्ति व सामर्थ्य को दर्शाता है।

पुरान नियम के समय में करीब तीन हज़ार वर्षों पहले ही, परमेश्वर ने इस बात की प्रतिज्ञा कर दी थी कि वह सारे जगह का उसकी मीरास बनाकर देने, उसे जगत के सार राष्ट्रों का शासक व उसके सारे विरोधियों पर उसे न्यायी ठहराने के द्वारा यीशु मसीह की महिमा करेगें (भजन 2:7-12)।

परमेश्वर ने यह भी प्रतिज्ञा की थी कि वह उसे स्वर्ग में अपने दाहिने हाथ पर सिंहासन पर बैठाकर और उसके सदा काल के लिए परमेश्वर के लोगों का महायाजक ठहराकर उसकी महिमा करेगें(भजन 110 :1-4)।

और परमेश्वर ने उसे पहले से ही बता दिया कि वह उसे धरती पर मन्दिर(कलीसिया का) के "कोने का पत्थर" बनाकर उसकी महिमा करेगा, अर्थात वह यीशु मसीह को धरती पर उसके आत्मिक लोगों को सवबसे महत्वपूर्ण भाग बनाकर उसकी महिमा करेगा (भजन संहिता 118:22-23; इफिसियों 1:22)।

दो हजार वर्ष पहले नये नियम की शुरूआत में अर्थात अपने पुनरूत्थान से पूर्व, यीशु मसीह ने कहा कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है (मत्ती 29:18)। इस तरह अपने पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण के बाद,यीशु मसीह सिंहासन पर विराजमान हुआ, "सब प्रकार की प्रधानता और अधिकार, और सामर्थ और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर जो न केवल इस लोक में पर आने वाले लोक में भी लिया जाएगा बैठाया, और सब कुछ उसके पैरों तले कर दिया"(इफिसियों 1:20-22)।

17:1

प्रश्न 3. जब यीशु मसीह ने कहा कि," पुत्र की महिमा कर, ताकि पुत्र भी तेरी महिमा कर सके" तो उसका क्या अर्थ था?

ध्यान दें। केवल परमेश्वर पिता ही परमेश्वर पुत्र की महिमा नहीं करता वरन परमेश्वर पुत्र भी परमेश्वर पिता की महिमा करता है।

यीशु प्रार्थना करते हैं कि, "धरती पर उद्धार के निमित्त किये गये मेरे सम्पूर्ण कार्यों, अर्थात मेरी मृत्यु, पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण और सिंहासन पर विराजमान होने के कारण, मेरी महिमा कर ताकि मैं भी तेरी महिमा कर सकूं।"

यीशु की प्रार्थना कोई स्वार्थी प्रार्थना नहीं थी, क्योंकि वह चाहता है कि उसे चाहे जो कुछ हो लेकिन परमेश्वर की महिमा होनी चाहिए। क्रूस और मुकुट केवल यीशु के गुणों को ही प्रगट नहीं करते, वरन परमेश्वर पिता के गुणों को भी प्रगट करते हैं। परमेश्वर के सारे गुण यीशु मसीह के उद्धार के निमित्त किये गये सम्पूर्ण कार्यों में प्रगट होते हैं। यूहन्ना 17:4 में यीशु मसीह कहते हैं कि उसने परमेश्वर पिता द्वारा उसके हाथों में सौंपे गये सारे कार्यों को पूरा करने के द्वारा परमेश्वर पिता की महिमा की है। परमेश्वर के सारे गुण यीशु मसीह की मृत्यु, पुनरूत्थान, स्वर्गारोहण और सिंहासन पर विराजमान होने में प्रगट हो जाते हैं। उदारहण के लिए:

(1) यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान परमेश्वर पिता की पवित्रता और धार्मिकता और पवित्रता प्रगट करती है।

क्योंकि परमेश्वर पूरी तरह से पवित्र और धर्मी है, इसलिए उसके लिए जरूरी है कि वह लोगों की हर प्रकार की अपवित्रता और दुष्टता से नफरत करे व उसे दण्डित करे। लेकिन यदि पवित्र और धर्मी नहीं होता और साधारणत: वह लोगों की अपवित्रता और दुष्टता को नजरअन्दाज़ या सहन कर लेता तो, उसने अपने प्रिय पुत्र को क्रूस पर मरने के लिए नहीं छोड़ दिया होता।

लेकिन क्योंकि वह पूरी तरह पवित्र और धर्मी है, इसलिए उसने यीशु मसीह को धरती पर उसके द्वारा किये गये उद्धार के कामों के लिए प्रतिफल को भी दिया। यदि परमेश्वर पवित्र और धर्मी नहीं होते तो, वे यीशु मसीह को मृतकों में से जीवित न करते और वे उसे सारे जगत का ताज नहीं पहिनाते।

(2) यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान धरती पर लोगों के लिए परमेश्वर के सिद्ध प्रेम, दया और अनुग्रह को भी प्रगट करते हैं।

एक तरफ जबकि परमेश्वर की पवित्रता और धार्मिकता लोगों पापों और दुष्टता के बदले सिद्ध दण्ड की मांग करती है, उसका प्रेम, दया और अनुग्रह उस दण्ड को अपने ऊपर उठा लेता है। परमेश्वर ने यीशु मसीह में होकर मनुष्य का रूप धारण किया और यीशु मसीह ने एक सिद्ध बलि के रूप में अपनी जान दी अर्थात वह "मेम्ना बनकर, जो सारे जगत के पापों को अपने ऊपर उठा लिये जाता है" (यूहन्ना 1:29)।

यीशु मसीह केवल उस सिद्ध धार्मिकता को प्रगट करके परमेश्वर की महिमा को प्रगट नहीं करते जो पाप को दण्डित करने की मांग करती है, परन्तु परमेश्वर के सिद्ध प्रेम को प्रगट करने के द्वारा भी महिमा करता है जिसके तहत वह वह उस दण्ड को अपने ऊपर उठा लेता है। इस संसार की पूरी कहानी में केवल यीशु मसीह का क्रूस ही परमेश्वर की धार्मिकता को परमेश्वर के प्रेम के साथ मिलाकर मनुष्यों के साथ मेल करा सकता है। यदि परमेश्वर केवल धर्मी होता, और प्रेम नहीं होता तो दुनिया का एक भी व्यक्ति उद्धार नहीं पा पाता, क्योंकि कोई भी जन अपने धार्मिक कामों (पाप अंगीकार,प्रार्थना,उपवास,दान और तीर्थ यात्रा)या भले कामों (प्रेरितों 13:39; रोमियों 3:20; गलातियों 2:16 ; 3:20-11;याकूब 2:10-11)के कारण धर्मी नहीं ठहर सकता! और यदि परमेश्वर केवल प्रेम होता, लेकिन धार्मिकता नहीं, तो वह एक बुरा ईश्वर होता और वह बुरे लोगों को दण्ड नहीं दे पाता और न ही विश्वासियों को धर्मी ठहरा पाता(यूहन्ना 15:13; रोमियों 5:6-11; 1पतरस 4:9-10)! लेकिन अब धार्मिकता की सारी मांगों को पूरा कर दिया गया है, उसका पवित्र चरित्र,धर्मी गुस्सा, उसकी दया में अद्‌भुत विश्वासयोग्यता,उसका अनुग्रह और प्रेम उसके सिहांसन से बह रहे हैं।

बहुमूल्य पत्थरों के रंगों का संदेश (प्रकाशितवाक्य 4:3) में परमेश्वर का महिमित और पवित्र चरित्र (पारदर्शी यसब) बुराई करने वालों का न्याय करने के लिए परमेश्वर का क्रोध (लाल रंग का कारलेनियन)और उस पर विश्वास करने वाले लोगों पर अनुग्रहकारी विश्वासयोग्यता और नये जीवन की बरसात के लिए (हरे रंग के मरकत) को कभी एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है।

पुराने नियम और नये नियम के दौर के विश्वासियों के लिए परमेश्वर के निर्णय का तूफान पहले ही गुज़र चुका है! "इसलिए अब जो मसीह में हैं उन पर कोई दण्ड की आज्ञा नहीं है"(रोमियों 8:1)। विश्वास के द्वारा सिद्ध धार्मिकता के निमित्त परमेश्वर की प्रतिज्ञा की हुई विश्वासयोग्यता की छाया मसीह के द्वारा किये गये पूर्ण किये गये उद्धार के कामों में सदा चमकती है (रोमियों 5:1)। परमेश्वर में से होने की ये तीन विशेषताएं परमेश्वर के सिंहासन से निकलती है। परमेश्वर अनन्त काल तक महिमामय पवित्रता, धार्मिक न्याय और विश्वासयोग्य उद्धार के साथ राज्य करता है।

17:2

प्रश्न 4. बाइबल लगातार क्यों "परमेश्वर के उन लोगों के बारे में बात करती है जिन्हें पिता ने यीशु मसीह को दिया है"?

ध्यान दें। यूहन्ना 17:2 में, यीशु कहते हैं कि परमेश्वर पिता ने यीशु मसीह को संसार के सारे लोगों पर अधिकार दिया है, ताकि वह उन सब को उद्धार दे सके "अर्थात उन सभी को जिन्हें परमेश्वर पिता ने उसे दिया है"।

(1) यीशु मसीह के पास संसार के इतिहास के सभी लोगों पर अधिकार और शक्ति है।

"सारी देहों" का मतलब संख्यात्मक तौर पर "सारे लोग" और गुणवत्ता के रूप में "सभी की कमजोरियों और उनके पापमय स्वभाव के साथ में"। इस तरह से यीशु का सभी वर्णों, भाषाओं,जातियों और राष्ट्रों के लोगों तक अधिकार है। (यूहन्ना 3:35; मत्ती 28:18)। संसार के सभी राजनैतिक, सैन्य, सामाजिक और धार्मिक अगुवों पर उसका अधिकार व सामर्थ है। उसके अधिकार व सामर्थ से कोई की बचा नहीं है।

(2) यीशु मसीह केवल उन्हीं लोगों को उद्धार करेगा जिन्हें परमेश्वर पिता ने उनके हाथों में कर दिया है।

इस संसार के लोग परमेश्वर पर प्रधान नहीं हैं वरन परमेश्वर लोगों पर प्रधान है। संसार के लोग परमेश्वर या यीशु मसीह को नहीं चुनते, लेकिन परमेश्वर उन लोगों को चुनता है जिन्हें वह बचाने वाला है। चाहे आप मनुष्य के पूर्ण रूप से स्वतन्त्र इच्छाधारी होने पर विश्वास करें या उसकी सीमित स्वतन्त्र इच्छा पर, उद्धार पाने वालों की संख्या सीमित है। बाइबल स्पष्ट रूप से बताती है कि संख्यात्मक तौर पर इतिहास में जन्में सभी लोग न तो धर्मी ठहरे और न ही उनका उद्धार हुआ है। जब यीशु मसीह " उन सभी के बारे में बात करते हैं जिन्हें पिता ने मुझे सौंपा है" तो वह उन लोगों के बारे में सोच रहा है जिन्हें परमेश्वर अपनी अनन्त योजना के अनुसार बचाएगा। यीशु मसीह यह शिक्षा मत्ती और यूहन्ना रचित सुसमाचार में देते हैं। मत्ती 11:27 में यीशु कहते हैं कि, " मेरे पिता ने मुझ सब कुछ सौंपा है, और कोई पुत्र को नहीं जानता, केवल पिता; और कोई पिता को नहीं जानता केवल पुत्र *और वह जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना चाहे*। और यूहन्ना 6:44,37 व 39 में वह कहता है,"कोई मरे पास नहीं आ सकता, जब तक पिता, जिस ने मुझे भेजा है, उसे खींच न ले। जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा, और जो कोई मेरे पास आएगा, उसे मैं कभी न निकालूंगा। और मेरे भेजनेवाले की इच्छा यह है कि जो कुछ उस ने मुझे दिया है उस में से मैं कुछ न खोऊँ।" और यूहन्ना 10:28-29 में यीशु सिखाते हैं कि, "कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन नहीं सकता। और (वास्तव में) मेरा पिता जिसने उन्हें मुझ को दिया है(अर्थात भेड़ों के झुण्ड को) सब से बड़ा है(विशेष या महत्वपूर्ण) और कोई (अन्य) उन्हें (इस झुण्ड को) पिता के हाथ से नहीं छीन सकता।"

यीशु मसीह को सारी दुनिया के लोगों पर शक्ति व अधिकार है और जिन लोगों को परमेश्वर पिता ने उसके हाथों में सौंपा है उसे बचाने से उसे कोई रोक नहीं सकता है। यीशु मसीह सभी लोगों को नहीं बचाएंगे, लेकिन वह हर वर्ण, संसार के सभी देशों के विभिन्न भाषा बोलने वाले लोगों को बचाएंगें-अर्थात वह अनगिनत लोगों को बचाएगें(प्रकाशितवाक्य 7:9)।

परमेश्वर ने जो यीशु मसीह को दिया हे वह वो झुण्ड है, जिसमें यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले दुनिया भर के अलग अलग जाति, व भाषा के लोग शामिल हैं(रोमियों 11:25-26)। यीशु "एक झुण्ड,एक चरवाहे"(यूहन्ना 10:16),एक मसीह की देह (कलीसिया) या संसार में परमेश्वर के एक राज्य की बातें करते हैं।

17:3

प्रश्न 5. अनन्त जीवन क्या है?

ध्यान दें। यीशु ने कहा,"और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है जानें।" यीशु ने अनन्त जीवन को परिभाषित नहीं किया, लेकिन यह दर्शाया कि अनन्त जीवन किस प्रकार प्रगट होता है और वह कितना अद्‌भुत है।

(1) अनन्त जीवन क्या है?

अनन्त जीवन वह नया जीवन है जो वह यीशु मसीह पर विश्वास करने वाले लोगों को देता है। उस नये जीवन में निम्न बाते शामिल होती हैं:

- यीशु मसीह को व्यक्तिगत रूप में जानना(यूहन्ना 17:3)
- अपनी ईश्वरीय विशेषताओं को बांटना(2पतरस 1:3-4)
- हमेशा उसकी उपस्थिति में जीवन व्यतीत करना(मत्ती 25:46)।

(2) अनन्त जीवन किस प्रकार प्रगट होता है?

अनन्त जीवन संसार में मसीहियों द्वारा प्रगट होता है:

जो आनन्द के साथ स्वीकार करते हैं कि(यूहन्ना 1:10) यीशु मसीह उनका उद्धारकर्ता और सर्वश्रेष्ठ प्रभु है आनन्द के साथ यीशु मसीह, उसके प्रेम और उसके मार्गदर्शन को स्वीकार करते हैं।

बाइबल पढ़ने और प्रार्थना करने के द्वारा यीशु मसीह(1यूहन्ना 1:1-3) के माध्यम से परमेश्वर के साथ संगति बनाये रहते हैं।

(3) अनन्त जीवन किसके पास है?

जिन लोगों के पास अनन्त जीवन होता है वे मानते हैं कि बाइबल का परमेश्वर,जिसने अपने आप को यीशु मसीह में होकर प्रगट किया है, एक मात्र सच्चा परमेश्वर है(यूहन्ना 1:1,14,18; कुलुस्सियों 1:9;2:9)। इस "परमेश्वर" के बारे में दूसरे धर्म प्रचार नहीं करते, क्योंकि दूसरे धर्म स्पष्ट तौर पर कहते हैं कि उनके ईश्वर ने अपने आप को यीशु मसीह में होकर प्रगट नहीं किया है(2कुरिन्थियों 1:3)! उनका ईश्वर एक मूर्ति है जिसे मनुष्यों ने अपने हाथों से बनाया है और जिन्हें विद्वानों और धार्मिक विचारों के आधार पर रचा गया है। उनका ईश्वर किसी मनुष्य के स्वरूप में या किसी कलाकार की कल्पना के अनुसार बनाया गया है। केवल बाइबल के परमेश्वर को मानने वाले लोगों के पास ही अनन्त जीवन है और वे प्रगट करते हैं कि उनके पास अनन्त जीवन है।

17:1

***प्रश्न 6.* परमेश्वर पिता के नाम को लोगों पर प्रगट करने का क्या मतलब है?**

ध्यान दें. यूहन्ना 17:6 में यीशु ने कहा, "मैं ने तेरा नाम उन पर प्रगट किया है जो तू ने जगत में से मुझे दिये।" परमेश्वर "पिता का नाम" का अर्थ है "स्वयं परमेश्वर", जैसा कि उसने अपने विशेष गुणों के साथ में उद्धार के क्षेत्र में अपने आपको प्रगट किया है (पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं तथा नये नियम के प्रेरितों द्वारा)। यीशु मसीह को छोड़कर और कोई जीवते परमेश्वर को नहीं जान सकता(यूहन्ना 14:6;मत्ती 11:27)। यीशु मसीह को छोड़ और कोई जन उसके जीवन से जुड़ी आत्मिक बातों,भीतरी भावनाओं और मूल्यों को नहीं जान सकता है। जो कोई यीशु मसीह को अस्वीकार करता है वह कभी परमेश्वर को नहीं जान सकता (लूका 10:16)। यीशु मसीह के इस संसार में आने को मकसद परमेश्वर को,उसके चरित्र को और उन लोगों पर उसकी योजनाओं को प्रगट करना था जिन्हें परमेश्वर पिता ने उनके हाथों में सौंपा था(यूहन्ना 1:16-18)। परमेश्वर पिता के सच्चे ज्ञान का अर्थ अनन्त जीवन है (यूहन्ना 17:3)।

17:21

***प्रश्न 7.* "मसीहियों के बीच में एकता" के सम्बन्ध में यीशु मसीह की प्रार्थना को मुझे किस तरह समझना चाहिए?**

ध्यान दें. यूहन्ना 17:21 में यीशु मसीह प्रार्थना करते हैं कि,"जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हों, इसलिए कि जगत प्रतीती करे, कि तू ही ने मुझे भेजा है।"

(1) दो प्रकार की एकता समान नहीं हैं।

बाइबल में अपने आप को प्रगट करने वाला परमेश्वर, परमेश्वर पुत्र अर्थात यीशु मसीह का अभौतिक,सात्विक, त्रीएकत्व व अनन्त भाव में पिता है। वह सारे मसीहियों का भी "पिता" है लेकिन आवश्यक तौर पर, प्रतिकात्मक या जीवात्मक तौर पर नहीं वरन आत्मिक तौर पर पिता है(मैनुएल 2,परिशिष्ठ 8 को देखें)।

परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र के बीच एकता अनिवार्य व सात्विक एकता है, लेकिन यीशु मसीह के परमेश्वर पिता और मसीहियों के बीच आत्मिक और रहस्यमय एकता है। इस एकता में मसीहियों को वही जीवन व व्यक्तिगत घनिष्ठ रिश्ता प्राप्त होता है जो परमेश्वर पिता का यीशु मसीह के साथ था।

संसार में मसीहियों के बीच में पायी जाने वाली एकता कोई संगठनीय एकता नहीं है, परन्तु यह एक अपने आप को पारस्परिक प्रेम व सहयोग के साथ प्रगट करती है। यीशु किसी विशेष कलीसिया के साथ जुड़ी विशाल विश्वव्यापी डिनोमिनेशन के बारे में नहीं विचार कर रहा है, क्योंकि नये नियम में कोई डिनोमिनेशन्स और याजकतन्त्र नहीं था। जिस तरह से परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र की एकता सृष्टि की रचना,उद्धार और न्याय में सहयोग के रूप में प्रगट हुई थी, वैसे ही संसार में रहने वाले मसीहियों के बीच एकता धरती पर उद्धार के काम में सहयोग देने में प्रगट होनी चाहिए। मसीहिया को इस संसार में सुसमाचार सुनाने के लिए,सच्चाई की सुरक्षा करने,एक साथ मिलकर सच्चे परमेश्वर की आराधाना करने तथा उसी समर्पण और प्रेम के साथ संसार के लोगों की सेवा करने के लिए एक संकल्प लेन चाहिए। उन्हें संसार में यह प्रदर्शित करना चाहिए कि वे एक दूसरे से प्रेम करते तथा एक दूसरे की उन्नति करने का प्रयास करते हैं (यूहन्ना 13:34-35)।

(2) परमेश्वर के स्वभाव में पायी जाने वाली एकता धरती पर मसीहियों के बीच पायी जाने वाली एकता की बुनियाद है।

परमेश्वरत्व सत्तामूलक एकता मसीहियों के बीच रिश्तो में आत्मिक एकता को सम्भव बनाती है। केवल वे लोग, जिन्होंने स्वर्ग से नया जन्म पाया हो, वे ही परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र में पये जाते हैं। केवल वे ही एक दूसरे के साथ आत्मिक एकता के भाग हो सकते हैं। केवल वे ही एक साथ मिलकर संसार में दुष्टता का सामना कर सकते हैं।

मसीहीयों को इस संसार में इसलिए प्रत्यक्ष तौर पर इस एकता को प्रगट करना चाहिए ताकि संसार के बाकि लोग विश्वास कर सके कि परमेश्वर है और उसी ने यीशु मसीह को इस संसार को बचाने के लिए भेजा है। बाइबल की सच्चाईयां सुनाई देती चाहिए और प्रत्यक्ष तौर पर दिखाई देनी चाहिए! अगर मसीही लोग एक साथ मिले रहे तो वे संसार में मज़बूत ठहरते हैं और उनका संसार पर अद्वितीय प्रभाव पड़ता है। इसलिए मसीहियों को मसीह को स्वीकार करने वाले दूसरे मसीहियों के साथ मिलकर शान्ति के साथ रहने का प्रयास करना चाहिए। एक साथ मिलकर मसीह का प्रचार और मसीह की खातिर दूसरे लोगों की सेवा करें।

निश्चय तौर पर, इसे बाइबल में पायी जाने वाली सच्चाई की कीमत पर नहीं किया जाना चाहिए। बाइबल की सच्चाई या शिक्षा कभी नहीं बदलती लेकिन उसे अभिव्यक्त या अनुप्रयोग करने के तरीके अलग अलग हो सकते हैं। उदारहण के लिए, मसीहियों को नियमित तौर पर एक दूसरे से मिलना चाहिए और प्रेम तथा भले कामों को करने के लिए एक दूसरे को उसकाना चाहिए(इब्रानियों 10:24-25)।

लेकिन बाइबल विशेष तौर पर यह नहीं बताती कि उन्हें कब और किस जगह मिलना चाहिए। बाइबल सर्वव्यापी तौर पर एकता के नाम पर किसी एक कर्तव्य का पालन(अंगीकार, प्रार्थना, उपवास, दान, धार्मिक यात्रा, धार्मिक पोशाकों को पहनने की) करने की वकालत नहीं करती, वरन वह प्रेम में एकता और भले कार्यो में सहयोग की बात करती है(इफिसियों 2:10)।

कदम 4. प्रयोग करें। **अनुप्रयोग**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन से ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आईये हम आपस में सोचविचार करके यूहन्ना 17:1-26 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें। नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. यूहन्ना17:1-26 तक में पाये जाने वाले अनुप्रयोगों के सम्भावित उदाहरण।

17:3। सुनिश्चित करता है कि आपके पास अनन्त जीवन है। अर्थात, सुनिश्चित कर लें कि आप यीशु मसीह को जानते हैं(2कुरिन्थियां 13:5)

17:4। परमेश्वर द्वारा आपको दिये गये कामों को पूरा करके परमेश्वर की महिमा करें(कुलुस्सियों 4:17)।

17:6। परमेश्वर को इस संसार में प्रगट करें, जिस प्रकारर से उसने अपने आप का मसीह में होकर प्रगट किया है।

17:6-8। यीशु मसीह की आज्ञाओं का पालन करने वाले लोग ही सच्चे मसीही हैं।

17:9। उन लोगों के लिए विशेष तौर प्रार्थना करें जिन्हें परमेश्वंर ने आपके हाथों में सौंपा है।

17:11-12। इस संसार की दुष्टता से बचाने के लिए मसीही की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें।

17:14-15। इस संसार में मसीह के लिए जिएं, लेकिन इस संसार के बुरे कामों में भाग न लें।

17:15। इस संसार में सक्रिय शैतान से सारे मसीहियों की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें।

17:17। होने दें कि परमेश्वर बाइबल के शिक्षाओं को अपने जीवन में ग्रहण करने व मानने पर पवित्र और अधिक पवित्र बनाए।

17:18। इस बात का स्वीकार करें कि परमेश्वर ने इस संसार में आपको एक विशेष उद्देश्य के लिए भेजा है।

17:19। इस संसार में एक शुद्ध और पवित्र जीवन व्यतीत करें ताकि दूसरें लोग भी शुद्ध जीवन जीवन प्रारम्भ कर दें।

17:20। अपने आत्मिक बच्चों और नाती पोतों के लिए प्रार्थना करें।

17:21-23। इस संसार भर में मसीही एकता, प्रेम आर सहयोग के लिए प्रार्थना करें ताकि बाकि संसार भी यीशु मसीह पर विश्वास करन लगे।

17:26। इस बात का समझ लें कि जब लोग बाइबल के परमेश्वर को जानते है तो ही वे परमेश्वर के समान प्रेम धारण के योग्य बन सकते हैं।

2. यूहन्ना 17:1-26 से व्यक्तिगत अनुप्रयोग का उदारहण।

मैं ने प्रेम को अपने जीवन का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य बना लिया है। मैंने निम्नलिखित तीन क्षेत्रों में बढ़ने को अपना लक्ष्य बना लिया है: अर्थात परमेश्वर के प्रति अधिक समर्पित होना, अधिक प्रयत्न के साथ बाइबल की आज्ञाओं को मानना और अधिकाई से दूसरे मसीहियों कों प्रेम करने का अभ्यास करना।

मैं अपनी प्रार्थनाओं में सावधान रहूंगा कि मैं केवल अपने लिए ही प्रार्थना न करूं, बल्कि इस संसार के अन्य लोगों के लिए भी प्रार्थना करूं, विशेषकर के उनके लिए जिन्हें परमेश्वर ने मेरे हाथों में सौंपा है।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[मध्यस्थता]*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन लोगों के समूह में ***लगातार प्रार्थना करें।*** एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलु. 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)00

1. **समर्पण:** चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।

2. यूहन्ना 11 के बाइबल अध्ययन के आधार पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ **प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।**

3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। 1पतरस 3-5** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

4. **याद करें।** नयी नयी बाइबल पदों को याद करें व उन पर मनन करें। **(3) परमेश्वर के वचन को सिखाएं। व्यवस्थाविवरण 6:6-7।** रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

5. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

6. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में **अपने लेखे का अद्यपन करें।** जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।